International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 67-69

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 67-69
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 09-04-2015
Accepted: 10-05-2015

डॉ0 योगेन्द्र कुमार
असि0प्रोफेसर एम0ए0(संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र) नेट– संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र डी0फिल0 ने0पी0जी0 कालेज बड़हलगंज–गोरखपुर

Correspondence:
डॉ0 योगेन्द्र कुमार
असि0प्रोफेसर एम0ए0(संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र) नेट– संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र डी0फिल0 ने0पी0जी0 कालेज बड़हलगंज–गोरखपुर

गीता में पृथ्वी के धारक तत्व

डॉ0 योगेन्द्र कुमार

Abstract
श्रीमद्भागवत गीता परम पावन पाप नाशक मुक्तिदायक पृथ्वी को धारण करने मे समर्थ अदभुत् ग्रंथ है। यह मोहासक्त की मोह वृत्ति का नाष करने वाला है। शरनागत को पाप से छुड़ाकर परमपद देने वाला है। इस में ज्ञान भक्ति और कर्म की त्रिवेणी विलसित है। पृथ्वी सत्य, वृहद्, ऋत, उग्र, दीक्षा, तप, ब्रहम, एवं यज्ञ पर टिकी हुई है। इन तत्वों का प्रतिपादन गीता में हुआ है। इनका स्वरुप आदि और इन तत्वों की पृथ्वी को धारण करने की सक्ति का विवेचन इस शोध पत्र का प्रमुख विषय है। प्रानियों के साथ–साथ यह पृथ्वी बची रहे इसका प्रयास करने वाले लोगो को श्री गीता जी की शरण लेनी चाहिए।

Key Words - ब्रह्य, उग्र, वृहत, दीक्षा, ऋत, तप, यज्ञ।

प्रस्तावना
श्रीमद्भगवदगीता भगवान श्री कृष्ण द्वारा कुरुक्षेत्र में मोहासक्त अर्जुन को दिया गया उपदेश है। गीता महाभारत के भीष्मपर्व का अंश है। गीता उपनिषदों का सार, गंगा गायत्री और वेद से विशिष्ट, लोकसग्रह की प्रेरणा देने वाली सर्वशास्त्रयी, परमरहस्यमयी, पापहारिणी, मोक्षदायिनी, सार्वजनी सभी कालों में प्रासंगिक मानवता का परम कल्याण कारक है। इसके अध्ययन, सुनाने एवं श्रवण से क्रमशः परमात्मा का यजन, पराभक्ति की प्राप्ति एवं शुभ लोको की प्राप्ति होती है। कार्तिक मास मे इसके पाठ का अनन्त पुण्य है ..... इसकी बराबरी का शास्त्र न ही हुआ है और न होगा।[1] गीता परमात्मा की वाङ्मयी मूर्ति है– गीता के प्रथम पॉच अध्याय परमात्मा के पांच मुख है 6–15 तक 10 अध्याय 10 हाथ 16वाँ अध्याय उदर एवं 17 व 18 अध्याय दोनों पाद है।[2] इसका पूरा महत्व केवल और केवल श्रीकृष्ण जानते है कुछ महात्म्य भगवान शिव जानते है हम मानव इसके महात्म्य का अंशांश ही जानते है। गीता के पाठ की महिमा पद्मपुराण के उत्तर खण्ड में गायी गयी है। गीता ज्ञान का आश्रय लेकर परमात्मा पूरी सृष्टि का पालन करते हैं, उसे धारण करते हैं। इसी सृष्टि का क्षुद्रांश है पृथ्वी। यह पृथ्वी जो टिकी हुई है और इस पर मानवता के साथ ही साथ जैव वैविध्य बना हुआ है। इसके पीछे कौन–कौन से तत्व है ऐसी जिज्ञासा का शमन अथर्वाऋषि ने किया है– सत्यं वृहदृतमुग्रं दीक्षा तपः ब्रह्य यज्ञः पृथ्वीं धारयन्ति..... अर्थवेद 12.1.1 अर्थात सत्य वृहद् ऋत उग्र दीक्षा तपस्या ब्रह्य और यज्ञ पृथ्वी को धारण करते है इन्ही के ऊपर पृथ्वी का अस्तित्व जैव वैविध्य और मानवता टिकी हुई है। पृथ्वी को बचाने के लिए सम्मलनों का आयोजन होता रहता है। मानवता सुरक्षित हो यह भी सदैव ही प्रसांगिक रहेगा। चूँकि गीता में इन तत्वो का विवेचन हुआ है। अतः गीता की प्रासंगिकता तब तक रहेगी जब तक पृथ्वी के आस्तित्व, जैव वैविध्य और मानवता की रक्षा का प्रश्न उठता रहेगा। अब हम क्रमशः गीता में पृथ्वी के धारक तत्वो पर निम्न क्रम से प्रकाश डाल रहे है।

1. पृथ्वी के धारक ब्रह्म व उग्र –
ब्रह्म परमात्मा है उग्र शक्ति है। ब्रह्म क्या है इसके उत्तर में गीताक्त है कि अक्षरं ब्रह्म परमम्–ब्रह्य परम अक्षर हैं जिसका क्षर न हो वही अक्षर है। परमात्मा का वाचक ऊँ है। ऊँकार जप पूर्वक शरीर त्यागने से परागति होती है।[3] परमात्मा सर्वभूतस्थित है। सब जगत की स्थिति एवं प्रलय परमात्मा से है उससे परे कुछ भी नही है।[4] सृष्टि परमात्मा मे वैसे ही ओत प्रोत है जैसे सूत्र मे मणियों का समूह ओत प्रोत होता है।[5] परमात्मा के एकांश में ही सम्पूर्ण सृष्टि है।[6] परमात्मा ने स्वयं ही अपनी शक्ति से पृथ्वी को धारण कर रखा है।
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यह मोजसा–गीता 15.13 अर्थात मै पृथ्वी मे प्रविष्ट होकर अपने उस बल से जो कि कामना और आसक्ति से रहित मेरा ऐश्वर्य बल जगत को धारण करने के लिए पृथ्वी में प्रविष्ट है, जिस बल के कारण भारवती पृथ्वी नीचे नही गिरती और फटती भी नही सारे जगत को

धारण करता हूँ। यही बात वेद मन्त्र भी कहते है– येन द्यौरुग्रा पृथ्वी च दृढ़ा, स दाधार पृथ्वीम् आदि। अतः यह पृथ्वी को धारण करने में परमात्मा ही अपनी शक्ति से समर्थ है। जीवो की रक्षा उनका आरोग्यता लाभ औशधियों पर निर्भर है। परमात्मा ने स्वयं कहा हैकि मै सोम बनकर औषधियों को पुष्ट करता हूँ।[7]

2. पृथ्वी का धारक यज्ञ

पृथ्वी का धारक है इसे सिद्ध करने से पहले इस पर कुछ चर्चा अपरिहार्य है। यज्ञ का अर्थ दान, पूजा, संगतिकरण है। यज्ञ विष्णु है, यज्ञ मे परमात्मा हि अधिष्ठित है।[8] यज्ञ शेष भोग से पापो से छुटकारा मिलता है। यज्ञ सात्विक राजस और तामस तीन प्रकार का होता है। यज्ञ मे हिंसा, क्षय और वैषम्य देखकर ही कपिल ने वेद के कर्म काण्ड भाग को पूरी तरह से मुक्ति मे अनुपयोगी कहा। तत्वाभ्यास से मुक्ति का उपदेश दिया। जिसके कारण समाज की कर्मकाण्ड से निवृत्ति बढ़ी। कृष्ण ने यज्ञ, दान, तप को मनुष्यों को पवित्र करने वाला एवं निष्काम भाव से करने पर मुक्ति का सहयोगी भी माना है। इसका कारण कदाचित् यही है कि यज्ञ देवों एवं मनुष्यों के परम कल्याण का साधन है। परस्परं भावयन्तः परमश्रेयः अवाप्स्यथ। इसके साथ ही साथ यज्ञ से वृष्टि से अन्य उपजते है और अन्य से ही प्राणी उत्पन्न होते है।

अन्नादभवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नवसम्भवः
यज्ञाद्भवन्ति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः

इस तरह से यज्ञ अन्य, जल के माध्यम से पूरी पृथ्वी ही क्या सृष्टि एवं जैव वैविध्य को बनाने वाला होने से पृथ्वी धारक तत्व है।

3. पृथ्वी का धारक दीक्षा –

दीक्षा पृथ्वी का धारक तत्व है इसे जानने के लिए दीक्षा का अर्थ जानना आवश्यक है, दीक्षा का लक्षण देवी भागवत मे इस प्रकार वर्णित है–

श्रृष्णु दीक्षां प्रवक्ष्यामि शिष्याणां भावितात्मनाम्।
देवाग्निगुरुपूजादावधिकारो यया भवेत्।।
दिव्यं ज्ञानं हि या दद्यात् कुर्यात् पापसयं तु या।
सैव दीक्षा सम्प्रोक्ता वेदतन्त्रविशारदैः।।

गीता जी देवता अग्नि गुरु की पूजा का अधिकार मानव मात्र को देती है। यह दिव्य ज्ञान (आत्मज्ञान है) इसके लिए ज्ञान कर्म भक्ति की त्रिवेणी तो यहाँ प्रवाहित ही है। इसके अतिरिक्त एक रहस्य उद्घाट्य है कि दिव्य ज्ञान, दिव्यदृष्टि से होता है, इस दिव्य दृष्टि को परमात्मा जो कि परम गुरु है अपने शिष्य, भक्त, सखा अर्जुण को दिये ही है।

ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् – गीता 11.8

दीक्षा पापक्षय करने वाली भी होती है। इस अर्थ में तो परमात्मा ने शरणगत को सभी पापों से छुटकार देने का आश्वासन दिया है।
हमारा प्रयास होता है कि पाप, अशुभ, अमंगल, इस संसार से मिटे इसके लिए भी गीता की प्रासंगिकता सदैव बनी रहगी।

4. पृथ्वी का धारक तप –

तप सुख को देने वाला, दुख एवं दोष का विनाशक है। तपस्या सृष्टि का आधार है। गीता मे इसके शरीर, वाचिक, मानस, सात्विक, राजस, एवं तामस भेदों की चर्चा है। देवता, ब्राहमण, गुरु, और ज्ञानी का पूजन शौच, आर्जव, ब्रह्मचर्य और अंहिसा यह शारीरिक तप है। उद्वेग न करने वाले, सत्य, प्रिय, हितकर वाक्य तथा स्वाध्याय का अभ्यास यह वाचिक तप है। मन की प्रसन्नता मौन आत्मनिग्रह और भावसंशुद्धि ये मानस तप है। फलाकांक्षा न रखने वाले युक्त पुरुषों द्वारा परम श्रद्धा के साथ तपा हुआ तप सात्विक है। सत्कार, मान, पूजा के लिए दम्भ के साथ जो आचरित होता है। वह चंचल अस्थिर तप राजस है। जो तप मूढ़ आग्रह से, आत्मा को पीड़ा देकर अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिए किया जाता है वह तामस तप है।
चूँकि तपस्या दुःख और दोष को नाश करने वाला और सुख को देने वाला है, इसलिए ये जीव मात्र के लिए उपयोगी है और मानवता को बनाये रखने मे समर्थ है।

5. पृथ्वी का धारक सत्य

सत्य पृथ्वी को धारण करता है। देख सुनकर समझी हुई बात को ठीक वैसे ही बतलाने के लिए कहे जाने
वाले प्राणियों के सत्य व हितकर वचन का नाम सत्य है। धर्म के चार अवयव है। सत्य, दया, शान्ति, और
अहिंसा। सत्य की बराबरी का कोई अन्य धर्मावयव नही है। धर्म न दूजो न सत्य समाना, अगम निगम पुराण
बखाना। सत्य का लक्षण देवीभागवत में निम्नवत है–

सत्यं न सत्यं खलु यत्रहिंसा।
दयान्वितं चानृतमेव सत्यम्।
हिंत पराणां भवतीह येन्य
तदैव सत्यं न तथान्थैव

सत्य वस्तुतः सम्पूर्ण दैवी सम्पत् का उपलक्षक है। चूकि सोलहवां अध्याय दैवी सम्पत् का ख्यापक है। अतः अभय आदि सम्पूर्ण दिव्य सदगुण मानवता व जीव मात्र को धारण करते है। यह अध्याय वस्तुतः परमात्मा का उदर है। यह द्योतित करता है कि दिव्य गुणों को जीवन में उतार कर हम पृथ्वी को बचा सकते है।

6. पृथ्वी का धारक ऋत –

ऋत के रक्षक वरुण है ऋत सदाचार का मार्ग है और बुराइयों से अस्पृष्ट है। कर्म सिद्धान्त की अवधारणा
ऋत की अवधारणा में विद्यमान है, संसार कर्मसूत्र मे गूथा हुआ है, सत्य कर्मो से उर्ध्व लोक की प्राप्ति एवं
निषिद्ध कर्मो से अधोगति की प्राप्ति होती है। गीता कर्म सिद्धान्त को मानती है। मनुष्य लोक कर्मबन्धन मे
जकड़ा हुआ है इसका संकेत परमात्मा ने किया है–
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके। गीता 15.2
यतो ही स्वकृत कर्मभोग भोगना ही पड़ेगा इस अटल सिद्धांत के कारण मनुष्य अपने कर्मो का परिणाम
समझकर भोगता है और बुराइयों में प्रवृत्त होने से बचने का प्रयास कर सकता ळें

7. पृथ्वी का धारक वृहत्

वृहद् का अर्थ गरिमा है, धर्म की स्थापना, दुष्टों का विनाश और साधुओं का संरक्षण यह सबसे बड़ी गरिमा
है। जिसके लिए परमात्मा को अवतार लेना पड़ता है। ज्ञान क्रिया के बिना भार स्वरुप होता है इसलिए
गीता आचरण के लिए प्रेरित करती हैं। यद्यदाचरित श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। उपर्युक्त, के साथ लोक संग्रह
भी बहुत बड़ी गरिमा है। गीता लोक मंगल की प्रेरणा देती रहती है। और मानव मात्र को लोक संग्रह के लिए सदैव सत कर्म की प्रेरणा देती है। जिससे मानवता सुरक्षित है।

निष्कर्ष – इस तरह हम कह सकते है कि पृथ्वी वृहत, उग्र, ऋत, दीक्ष,ा तप, सत्य, यज्ञ से धारित होती है। धारित होने की आशय है। पृथ्वी की सुरक्षा व जैव रक्षा तथा मानवता कि सुरक्षा। इनके लिए श्री गीता जी का इस सन्दर्भ में अध्ययन अत्यन्त उपयोगी है।

सन्दर्भ संकेत

1. स्कन्द पुराण – वैष्णव खण्ड – का0मा0 2/49–50

2. पद्मपुराण – उत्तर खण्ड 171/27–28
3. गीता – 8.13
4. वही, 7/6–7
5. वही, 6/31
6. वही, 10.42
7. वही, 15.13
8. वही, 3.15